पाठ - 10

सुभाषचन्द्र बोस का पत्र

एन.सी.केलकर के नाम

आइए सीखें - ■औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र। ■प्रत्यय, उपसर्ग के अन्तर को समझना। ■समास तथा समास के भेद समझना। ■पत्र विधा के माध्यम से विचारों का सम्प्रेषण।

माण्डले सेंट्रल जेल, बर्मा

20.08.1925

प्रिय श्री केलकर,

मैं पिछले कुछ महीनों से आपको लिखने की सोच रहा हूँ, जिसका कारण केवल यह रहा है कि मैं आप तक ऐसी जानकारी पहुँचा दूँ कि जिसमें आपको दिलचस्पी होगी। मैं नहीं जानता कि आपको मालूम है या नहीं कि मैं यहाँ गत जनवरी से कारावास में हूँ। जब बहरामपुर जेल (बंगाल) से मुझे माण्डले जेल के लिए स्थानान्तरण का आदेश मिला था, तब मुझे यह स्मरण नहीं आया था कि लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास काल का अधिकांश भाग माण्डले जेल में ही गुजारा था, जब तक मैं यहाँ सशरीर आ नहीं गया। चहारदीवारी में यहाँ के बहुत ही हतोत्साहित कर देने वाले परिवेश में स्वर्गीय लोकमान्य ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीता भाष्य' ग्रन्थ का प्रणयन किया था। जिसने मेरी नम्र राय में उन्हें शंकर और रामानुज जैसे प्रकाण्ड भाष्यकारों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।

जिस वार्ड में लोकमान्य रहते थे, वह आज तक सुरक्षित है यद्यपि उसमें फेरबदल किया गया है और बड़ा बनाया गया है। हमारे अपने वार्ड की तरह वह लकड़ी के तख्तों से बना है, जिसमें गर्मी में लू और धूप से, वर्षा में पानी से, शीत ऋतु में सर्दी से तथा सभी ऋतुओं में धूलभरी हवाओं से बचाव नहीं हो पाता। मेरे यहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण बाद मुझे उस वार्ड का परिचय दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया था, लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि माण्डले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगी। ऐसे ही अन्य जेलों की तरह यह एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्ष तक रहा था।

शिक्षण संकेत -■ बच्चों को पत्र विधा के बारे में समझाइए। ■पाठ का शुद्ध व स्पष्ट रूप से वाचन करें तथा बच्चों से करवाइए ■शुद्ध उच्चारण हेतु प्रेरित कीजिए। ■आजादी से जुड़ी रोचक व प्रेरक कहानियाँ भी सुनाएँ। बर्मा का आधुनिक नाम 'म्यांमार' है। ■लोकमान्य तिलक तथा देशबन्धु चितरंजन दास के बारे में पुस्तकालय से या अन्य स्रोत सामग्री से जानकारी प्राप्त करवाइए।

हम जानते हैं कि लोकमान्य ने कारावास में छह वर्ष बिताए। लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि उस अवधि में उन्हें किस हद तक शारीरिक और मानसिक यन्त्रणाओं से गुजरना पड़ा था। वे यहाँ एकदम अकेले रहे और उन्हें कोई बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बन्दी से मिलने-जुलने नहीं दिया जाता था। उनको सान्त्वना देने वाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकदम एकाकी रहते थे। यहाँ रहते हुए उन्हें दो या तीन भेंटों से अधिक का मौका नहीं दिया गया और ये भेंट भी पुलिस और जेल अधिकारियों की उपस्थिति में हुई होंगी, जिससे वे कभी भी खुलकर और हार्दिकता से बात नहीं कर पाए होंगे।

उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुँचने दिया जाता था। उनकी जैसी प्रतिष्ठा और स्थिति वाले नेता को बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर देना एक तरह की यन्त्रणा ही है और इस यन्त्रणा को जिसने भुगता है वही जान सकता है। इसके अलावा उनके कारावास की अधिकांश अवधि में देश का राजनैतिक जीवन मन्दगति से खिसक रहा था और इस विचार ने उन्हें कोई सन्तोष नहीं दिया होगा कि जिस उद्देश्य को उन्होंने अपनाया था उनकी अनुपस्थिति में आगे बढ़रहा है।

उनकी शारीरिक यन्त्रणा के बारे में जितना ही कम कहा जाए, बेहतर होगा। वे दण्डसंहिता के अन्तर्गत बन्दी थे और इस प्रकार आज के राजबन्दियों की अपेक्षा कुछ मायनों में उनकी दिनचर्या कहीं अधिक कठोर रही होगी। इसके अलावा उन्हें मधुमेह की बीमारी थी। जब लोकमान्य यहाँ थे, माण्डले का मौसम तब भी प्रायः ऐसा रहा होगा जैसा वह आजकल है और अगर आज नौजवानों को शिकायत है कि वहाँ का जलवायु शिथिल कर देने वाला और मन्दाग्नि तथा गठिया को जन्म देने वाला है और धीरे-धीरे पर अटूट रूप से वह व्यक्ति की जीवन-शक्ति को सोख लेता है, तो लोकमान्य ने, जो वयोवृद्ध थे, कितना कष्ट झेला होगा।

लेकिन इस कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं, इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता होता है, उन अनेक छोटी-छोटी बातों का, जो किसी बन्दी के जीवन में सुईयों की सी चुभन बन जाती है और जीवन को दूभर बना देती है। वे गीता की भावना में मग्न रहते थे और शायद इसलिए दुःख और यन्त्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उनके बारे में किसी से कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

समय-समय पर मै इस सोच में डूबता रहा हूँ कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह लम्बे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था और हर बार मैंने अपने आप से पूछा कि 'अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है, तो महान लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी, जिसके विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं रहा होगा।' यह विश्व भगवान की कृति है, लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वो जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के हास के बिना बन्दी-जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान काम नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है,

सभी तरह के नियमों के आगे नत होना होता है और फिर भी आन्तरिक प्रफुल्लता अक्षुण्ण रखनी होती है। दास-वृत्ति ठुकरानी होती है और फिर भी मानसिक सन्तुलन अडिग बनाए रखना होता है। केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक ही, जिसे अदम्य इच्छाशक्ति का वरदान मिला था, उस बन्दी जीवन के शक्ति हननकारी प्रभावों से बच सकता था, उस यन्त्रणा और दासता के बीच मानसिक सन्तुलन बना रख सकता था और 'गीता भाष्य' जैसे विशाल एवं युग-निर्माणकारी ग्रन्थ का प्रणयन कर सकता था।

अगर किसी को प्रत्यक्ष अनुभव पाना है कि इतने ज्यादा प्रतिकूल, शक्तिहारी और दुर्बल बना लेने वाले वातावरण में लोकमान्य के 'गीता भाष्य' जैसे प्रकाण्ड पाण्डित्यपूर्ण एवं महान ग्रन्थ की रचना करने के लिए कितनी प्रबल इच्छाशक्ति, साधना की गहराई एवं सहनशीलता अपेक्षित है, तो जेल में आकर रहना चाहिए। जहाँ तक मेरी अपनी बात है, मैं जितना ही इस विषय में चिन्तन करता हूँ, उतना ही ज्यादा मैं उनके प्रति आदर और श्रद्धा में डूब जाता हूँ। आशा करता हूँ कि मेरे देशवासी लोकमान्य की महत्ता को आँकते हुए इन सभी तथ्यों को भी दृष्टिपथ में रखेंगे। जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद-इतने सुदीर्घ कारावास को झेलता गया और फिर भी जिसने अपनी समस्त बौद्धिक क्षमता एवं संघर्ष शक्ति को अक्षुण्ण बनाए रखा और जिसने उन अन्धकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए।

लेकिन लोकमान्य ने प्रकृति के जिन अटल नियमों से अपने बन्दी जीवन के दौरान टक्कर ली थी उनको अपना बदला लेना ही था और अगर मैं कहूँ तो मेरा विश्वास है कि जैसे देशबन्धु के शरीरान्त का क्रम अलीपुर केन्द्रीय कारागार में आरम्भ हो गया था, वैसे ही लोकमान्य ने जब माण्डले को अन्तिम नमस्कार किया था, तो उनके जीवन के दिन गिने-चुने ही रह गए थे। निस्सन्देह यह एक गम्भीर दुःख का विषय है कि हम अपने महानतम पुरुषों को इस प्रकार खोते रहे, लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि क्या वह दुःखद दुर्भाग्य किसी न किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता था।

आदरपूर्वक
आपका स्नेहभाजन,
- सुभाष सी.बोस

(सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 (तेईस) जनवरी सन् 1897 (अठारह सौ सत्तानवे) ई. को ओड़िसा प्रान्त के कटक शहर में हुआ था। भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सुभाषचन्द्र बोस का महत्वपूर्ण स्थान है। आप कांग्रेस के अध्यक्ष भी थे। भारत से बाहर जाकर आपने आजाद हिन्द फौज का सुदृढ़ीकरण किया आपने अंग्रेज शासकों से लोहा लिया था। **'जय हिन्द', 'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा'** आदि नारे आपकी देन हैं। सारा देश उन्हें 'नेताजी' के नाम से याद करता है।)

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

दिलचस्पी	-	प्रकाण्ड	-	प्रणयन	-	शरीरान्त	-
निष्कासन	-	बलात्	-	प्रेरणा	-	मन्दाग्नि	-
यन्त्रणा	-	कारावास	-	यातना	-	प्रतिबद्ध	-
ह्रास	-	प्रफुल्लता	-	अक्षुण्ण	-	अदम्य	-
स्नेह भाजन	-	सुदीर्घ	-	हननकारी	-	अपेक्षित	-
भाष्यकार	-	दण्ड संहिता	-	अडिग	-		

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(अ) सुभाषचन्द्र बोस को किस जेल से किस जेल के लिए स्थानान्तरण आदेश मिला?

(ब) सुभाषचन्द्र बोस ने माण्डले जेल को तीर्थ स्थल क्यों कहा है?

(स) मांडले जेल में लोकमान्य तिलक के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था?

(द) सुभाषचन्द्र बोस के अनुसार अपने आपको बन्दी जीवन के अनुकूल बनाने के लिए स्वयं में क्या-क्या परिवर्तन लाने पड़ते हैं?

(य) सुभाषचन्द्र बोस ने लोकमान्य तिलक को विश्व के महापुरुषों में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलने की सिफारिश क्यों की है?

प्रश्न 2. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

(अ) लोकमान्य तिलक ने जेल में सुप्रसिद्ध.......................ग्रन्थ का प्रणयन किया था।
(भारत की खोज/गीता भाष्य)

(ब) जेल में लोकमान्य तिलक अपना समय.................बिताते थे।
(किताबें पढ़कर/चित्र देखकर)

(स) सुभाषचन्द्र बोस ने अपने पत्र में माण्डले जेल को........................माना।
(तीर्थ स्थल/यातना स्थल)

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए -

अदम्य, प्रणयन, कृतित्व, सुदीर्घ, यन्त्रणा

2. **नीचे के चित्र में 'दुर्' उपसर्ग तथा 'तम' प्रत्यय को गोले में लिखा है। इसके आस-पास कुछ शब्द लिखे हैं। इन शब्दों में 'दुर्' तथा 'तम' जोड़कर, उदाहरण के अनुसार शब्द बनाइए -**

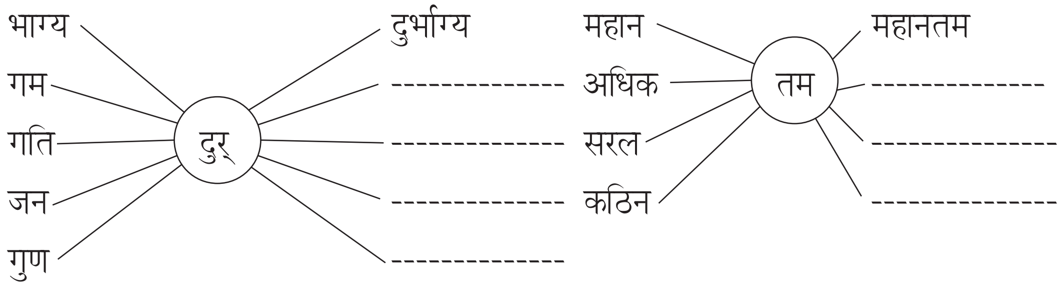

3. **'दार्शनिक' शब्द में दर्शन शब्द के साथ 'इक' प्रत्यय जुड़ा है। इस पाठ में से 'इक' प्रत्यय से बने शब्द छाँटकर लिखिए।**

4. **निम्नलिखित शब्द मूल शब्दों में उपसर्ग जोड़कर बने हैं। इनमें से उपसर्ग और मूल शब्द छाँटकर लिखिए -**

सपूत, परिवेश, सशरीर, आदेश , अनुपस्थित , स्वदेश, प्रकाण्ड, सुप्रसिद्ध

5. **समास के भेद निम्नलिखित तालिका से समझिए -**

समास के भेद

क्रम	समास (नाम)	विशेषता (पहचान)	उदाहरण	विग्रह
1.	**अव्ययी भाव समास**	प्रथम पद अव्यय	यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
		प्रथम पद प्रधान	प्रतिदिन	दिन-दिन
2.	**तत्पुरुष समास**	अन्तिम पद प्रधान	राजपुरुष	राजा का पुरुष
		सम्बन्ध तत्व का लोप	रोगग्रस्त	रोग से ग्रस्त
3.	**कर्मधारय समास**	एक पद विशेषण	नीलगाय	नीली गाय
		दूसरा विशेष्य	श्याममेघ	काले बादल
4.	**द्वन्द्व समास**	दोनों पद प्रधान	माता-पिता	माता और पिता
		योजक (और) शब्द का लोप	सुख-दुःख	सुख और दुख
5.	**द्विगु समास**	पहला पद संख्यावाची	नवरत्न	नौ रत्नों का समूह
		विशेषण	त्रिभुज	तीन भुजाओं वाला
6.	**बहुब्रीहि समास**	इसमें दोनों पद के अलावा अन्य पद	लम्बोदर	लम्बा है उदर जिसका (गणेश)
		प्रधान	पीताम्बर	पीत है अम्बर जिसका (विष्णु)

निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए और समझकर उनका विग्रह कीजिए -

कर्मयोग, चहारदीवारी, गीताभाष्य, शीत ऋतु, धूलभरी, देशवासी, तीर्थस्थल, मन्दगति, युगनिर्माण, दशानन, दिनरात।

आइए समझिए

'सुभाषचन्द्र बोस का पत्र' व्यक्तिगत पत्र है, उन्होंने यह पत्र एन.सी. केलकर को लिखा था-

ह ऐसे पत्र जो सगे सम्बन्धियों, मित्रों, परिचितों को लिखे जाते हैं, उन्हें अनौपचारिक पत्र कहते हैं।

इसके अतिरिक्त जो पत्र सरकारी कार्यालय के अधिकारियों, विद्यालय के प्रधानाध्यापक आदि को लिखे जाते हैं, उन्हें **औपचारिक पत्र** कहते हैं।

औपचारिक पत्र के प्रमुख बिन्दु -

1. औपचारिक पत्र में, जिसे पत्र लिखा जाता है, इसका पद और पता सबसे ऊपर बायीं ओर लिखते हैं - जैसे

   प्रधानाध्यापक (पद)

   शासकीय माध्यमिक विद्यालय........। (पता)

2. भेजने वाले का नाम और पता नीचे दाईं ओर लिखते हैं। इसके साथ ही नाम के बाई ओर कोने में दिनांक लिखते हैं -

   दिनांक....... आपका आज्ञाकारी शिष्य

   नाम........................

   पता.......................

3. पत्र की विषय वस्तु बीच में आती है।
4. औपचारिक पत्रों में अपनत्व की बातें नहीं आती।

- अपने प्रधानाध्यापक को शुल्क मुक्ति हेतु एक प्रार्थना पत्र लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. लोकमान्य तिलक की जीवनी अपनी शाला के पुस्तकालय या अन्य जगह से प्राप्त कर पढ़िए।
2. अपने क्षेत्र के किसी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखिए।
3. देशबन्धु चितरंजनदास के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

धैर्य और विश्वास ने पर्वतों से भी टक्कर ली है और पत्थरों को भी पिघला दिया है।